काठगढ़ महादेव इतिहास

ॐ

स्वयं भू-प्रकट आद् शिवलिंग

प्राचीन शिव मन्दिर
प्रबन्धकारिणी सभा काठगढ़
(पंजीकृत) तह॰ इन्दौरा जिला कांगड़ा (हि॰ प्र॰) 176401

ॐ नमः शिवाय
काठगढ़ महादेव
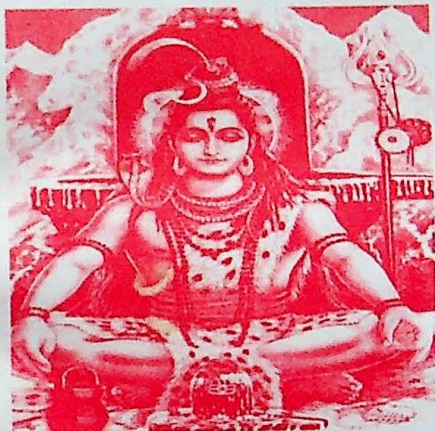
लेखक एवं सम्पादक मण्डल
प्राचीन शिव मन्दिर, प्रबन्धकारिणी सभा
काठगढ़

प्राचीन शिव मन्दिर, काठगढ़
कांगड़ा (हि० प्र०)
176401

विषय–सूची

भूमिका

धन्य हैं गांव काठगढ़ के निवासी, धन्य हैं इन्दौरा तहसील परिक्षेत्र के लोग तथा धन्य हैं मेरे प्रिय भारत के जन मानस जहां भगवान् आदिदेव– महादेव जी आदिकाल से स्वयं भूमि से प्रकट हो वर्तमान कलयुग में भी अपनी प्रत्यक्षता का प्रमाण दे रहे हैं । विशेषकर धन्य हैं आप सभी श्रद्धालुगण जो महाशिवरात्रि के पावन दिवस एवं अन्य उत्सवों में इस पवित्र स्थान पर प्रभु की महिमा का गुणगान करके पुण्य अर्जित करते हैं । आज मुझे काठगढ़ के स्वर्गीय विद्वान पं॰ रूड़ चन्द जी की पंक्तियां स्मरण हो रही है :–

कित काशी कित काठगढ़ खुरासान गुजरात ।
तुलसी ऐसे जीव को प्रालब्ध ले जात ।।

धन्य हैं वे कर्मचारी व अधिकारीगण जिन्हें इन्दौरा तहसील के परिक्षेत्र, नूरपुर उपमण्डल परिक्षेत्र जिलास्तर तथा प्रान्तीय स्तर पर इस पवित्र स्थान की सेवा करने का अवसर प्रदान होता है । धन्य हैं वे लेखकगण जिनकी योग्य रचनाएं इस पवित्र स्थान के इतिहास में प्रकाशित हुई हैं । धन्य हैं वे दानी महानुभाव जो आपनी नेक कमाई में से इस देव स्थान की प्रगति के लिए दान देते हैं तथा धन्य हैं वे लोग जो मन्दिर सभा में अपनी सदस्यता डालकर अपने व्यक्तिगत कार्यों में से समय निकाल कर निःस्वार्थ भाव से सेवा सुधार के कार्य में निरन्तर क्रियाशील हैं ।

पाठक बन्धुओ यह इतिहास पुस्तक आपने आप में आदिकाल से इस पवित्र स्थल की महत्ता विशेषता एवं सर्व धर्म एकता की गूढ़ रहस्यमयी पावन तथा स्मरणीय कथा व स्मृति सम्प्रेषित करती हैं । यद्यापि गत लगभग 14–15 वर्षों से प्रबन्धक सभा ने इस धार्मिक स्थल के उत्थान व समाज सुधार तथा जन–कल्याण का बीड़ा उठाया हुआ है ।

गतवर्षों से यहां आने वाले भक्तजनों व श्रद्धालुओं की भरपूर मांग रही है कि इस आदि देव स्थान का इतिहास लिखित रूप से मिलना चहिये । मुझे यह पुस्तिका आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हर्ष व गौरव की अनुभूति हो रही है कि आप प्रकाशित पुस्तिका को अत्याधिक पसन्द करेंगं । यद्यपि सम्पादक मण्डल ने भरपूर प्रयत्न किया है कि प्रकाशित रचनाओं में कोई भी तर्क वितर्क व किसी के हृदय को ठेस पहुंचाने वाला शब्द न लिखा जाए, परन्तु फिर भी विषय की उपयोगित के कारण कोई त्रुटि रह गई हो तो क्षमाप्राथी हूं ।

ओम प्रकाश कटोच
(प्रधान)
प्राचीन शिव मन्दिर
प्रबन्धकारिणी काठगढ़ सभा (पंजीकृत)

श्री गणेश जी के गुणों का अनुसरण

वैदिक एवं पौराणिक संस्कृति के सभी उपासक सिद्ध दाता गणेश कह कर ही अपने सभी सांसरिक कार्यों को आरम्भ करते हैं और पुराणकार भी सर्व प्रथम गणपति–पूजन का ही आदेश देते हैं । यहां तक कि उन के माता–पिता भगवान् गौरीशंकर से भी गणेश जी का पूजन प्रथम होता है । अनेक बार अनेक व्यक्तियों ने यह प्रश्न किया कि सर्वप्रथम गणेश–पूजन ही क्यों ?

गणेश–पूजन के समय गणेश जी के बारह नामों का स्मरण किया जाता है और अन्त में कहा जाता है कि –

द्वादशैतानि नामानि, यः पठेत् श्रुणुयादपि ।
विद्यारम्भे विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव, विघ्नस्तस्य न जायते ।

जो इन बारह नामों को पढ़ता है, श्रवण करता है, उसके विद्यारम्भ में, विवाह में, गृह–प्रवेश में, बाहर जाने में, संग्राम–भूमि में और किसी भी संकटमयी परिस्थिति में विघ्न नहीं हो पाता ।

श्रद्धा की भूमि पर खडे होकर चाहे हम गणेश जी के नामों का उच्चारण करने मात्र से विघ्नों के न होने की या उत्पन्न हुए विघ्नों के विनाश की बात स्वीकार कर लें– इसमें मुझे भी आपत्ति नहीं, क्योंकि देवी शक्तियों का पुण्य स्मरण विघ्न–हरण और विघ्न–विनाशक होती ही है, किन्तु कभी–कभी व्यवहार की भूमि पर खड़े होकर जब विचार करते हैं तो नया दृष्टिकोण सामने आता है, जिससे मैं मनोविज्ञान– सम्मत एवं व्यवहार सम्मत कह सकता हूं ।

गणेश जी के बारह नामों पर विचार करते हुए उन को व्यवहारिक रूप में यदि आत्मसात् कर लिया जाये– उन नामों द्वारा व्यक्त गुणों को यदि धारण कर लिया जाये तो मैं समझता हूं कि जीवन के किसी भी व्यवहार में किसी विघ्न की सम्भावना हो ही नहीं सकती । वे बारह नाम और उनके द्वारा व्यक्त गुण इस प्रकार है :–

१. **सुमुख** – यह एक मनोवैज्ञानिक सिद्धांत है कि किसी भी कार्य का यदि सोत्साह किया जाए तो वह अवश्य पूर्ण होता है । ज्योतिष शास्त्र के महान् महर्षि गर्गाचार्य जी ने तो सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त का काल ही वही माना है "यदा मनस्युत्साहश्च

जायते" – जब मन किसी कार्य को करने का उत्साह जागृत हो जाये वही सबसे अच्छा मुहूर्त होता है ।

जब मन में उत्साह होता है तो चेहरे पर अनायास रौनक आ जाती है, मुख–कमल खिल जाता है– मनुष्य "सुमुख" अर्थात् सुन्दर मुखवाला बन जाता है । खिले चेहरे को देख कर सब प्रसन्न होते है, रोती शक्ल को कोई देखना भी नहीं चाहता है । अतः अपने जीवन का प्रत्येक व्यवहार सुमुख होकर करो । ऐसा करने पर विघ्नों की सम्भावना आपसे सदैव दूर ही रहेगी ।

२ एक दन्त – " एक दन्त" का शब्दार्थ है एक दांत या एक दांतवाला देवता या व्यक्ति । मैं समझता हूं एक –दन्त व्यक्ति ही देवता बन जाता है ।

एक–दन्त शब्द का व्यावहारिक अर्थ (लाक्षणिक अर्थ) है, एक बात कहने वाला अर्थात् दृढ़–प्रतिज्ञ व्यक्ति, जो बार–बार कहे हुए वचन से फिरता न हो । वचन का पक्का हो सत्यावादी हो ।

"एक दाँत की रोटी" का मुहावरा घनिष्ठ प्रेम के लिए भी प्रसिद्ध है । " मेरी उसकी एक दांत की रोटी है" इस वाक्य का अर्थ है, मुझमें और उसमें घनिष्ठ एवं अटूट प्रेम सम्बन्ध है ।

जो व्यक्ति एक–दन्त होगा अर्थात् वचन का पक्का होगा और सबसे प्रेम–व्यवहार करने वाला होगा । उसके किसी भी जीवन–व्यवहार में विघ्न नहीं आ सकता है । अतः निर्विघ्नता के लिये प्रत्येक व्यक्ति को दन्त बनकर जीवन–व्यवहार चलाना चाहिये ।

३ कपिल – कपिल शब्द का अर्थ है श्वेत सफेद उज्जवल–मलिनता से रहित । जिस व्यक्ति का मन मलिन नहीं, जिसके जीवन की श्वेत चादर पर किसी अवगुण का धब्बा नहीं, जिसका व्यवहार शुद्ध है– साफ है और जो शरीर और वस्त्रों को भी स्वच्छ रखता है , उसके जीवन में विघ्न नहीं आ सकते हैं ।

४ गज–कर्ण – गणेश जी को गजानन भी कहा जाता है, जब–जब वे गजानन हैं तो स्वभावतः ही वे "गजकर्ण" भी हैं फिर भी उनको गज–कर्ण विशिष्ट रूप से कहने का भाव यह हो सकता है कि हाथी कानों की दृष्टि से बहुत सावधान रहता है, उनके कान पंखों की तरह हर समय हिलते रहते हैं ।

गज–कर्ण बनने का भाव यही है कि जो व्यक्ति कानों का कच्चा नहीं, अर्थात् किसी की निन्दा चुगली नहीं सुनता, हर एक व्यक्ति की बात सहसा विश्वास नहीं कर लेता और जो चारों के वातावरण में कौन कैसी बातें कर रहा है, किस विषय की चर्चा कर रहा है आदि बातों का ध्यान रखता है, उसके जीवन में विघ्नों के आने की सम्भावना ही नहीं रह जाती, अतः निर्विघ्नता के लिये "गज–कर्ण" होना आवश्यक है ।

५ लम्बोदर – इस शब्द का अर्थ है बड़े पेट वाला, लम्बी तोंद वाला नहीं । इस व्यवहार में प्रायः इस मुहावरे का प्रयोग करते हैं कि "मेरा पेट बहुत बड़ा है" अर्थात्

मैं किसी की जो बात सुन लेता हूं उसको सहसा किसी के सामने प्रकट नहीं करता, उसको मन में ही रखता हूं, अर्थात् गम्भीर स्वभाव वाले व्यक्ति को ही लम्बोदर व्यक्ति ही समाज में सम्माननीय माना जाता है । जो व्यक्ति किसी की बात को पचा नहीं सकता, झट उगल देता है उसके जीवन के विघ्नों का प्रवेश सहज ही हो जाता है, अत– निर्विघ्नता के लिये लम्बोदर बनिये ।

६ विकट – वैसे तो इस शब्द का अर्थ है भयंकर एवं कठिन, परन्तु प्रकरण में इसका अर्थ "रो–दाब वाला" भी किया जा सकता है । इस संसार में सर्वथा दीन–हीन को सभी दबा लेते हैं, अतः प्रत्येक व्यक्ति को जीवन व्यवहार में सफलता के लिये कुछ 'विकट' अर्थात् रोबदार वाला भी बनकर रहना चाहिये ।

यदि विकट का अर्थ कठोर ग्रहण किया जाये तो इसका अभिप्राय यह होगा कि कठोर परिश्रमी व्यक्ति का जीवन ही विघ्नों से बच सकता है, अतः निर्विघ्न के लिये कुछ विकट होना भी अपेक्षित है ।

एक महात्मा ने एक सर्प को उपदेश देकर कहा, " किसी को डंसना भयंकर पाप है, अतः डंसना छोड़ दो ।" उसने डंसना छोड़ दिया तो उस सर्प से दूर रह कर डरने वाले भी अब उसके पास आकर उसे पत्थर मारने लगे । कुछ दिन बाद वे महात्मा वहां से पुन– निकले और सर्प को घायल देखकर बोले; "अरे ! तुम्हारी यहा हालत ?" सर्प ने कहा, "महात्मा जी ! आपने ही तो कहा था किसी को डंसना नहीं ।" महात्मा गंभीर होकर बोले, "नागराज!" मैंने डंसना मना किया था, किन्तु फुंकार मारते रहने से तो रोका नहीं था ।'

अभिप्राय यह है कि भंयकर बनकर भी किसी को कष्ट मत दो, परन्तु अपना दबदबा भी न नष्ट होने दो, यही विकट रहने का अभिप्राय है ।

७ **विघ्न–नाशक** – इस शब्द का अर्थ है विघ्नों का नाश करने की शक्ति रखने वाला, विशिष्ट व्यक्तित्व वाला व्यक्ति । फूलों के साथ कांटे भी उत्पन हो जाते हैं । कभी–कभी फूल लगाने पर भी नहीं लगते और कंटीली झड़ियां बिना लगाए पैदा हो जाती हैं । इस प्रकार जीवन के बाग में न चाहते हुए भी पूर्व कर्मों के फलस्वरूप विघ्नों के कांटे उत्पन्न हो जाते हैं, परंन्तु धैर्यवान् साहसी और धर्म–निष्ठा वाला व्यक्ति उन्हें धैर्य से भोग कर, साहस से उनका सामना करके अथवा दैवी शक्तियों के वरदानों से उन्हें नष्ट कर देते हैं । इस प्रकार "विघ्नंनाशक" बन कर जीवन–व्यवहार की साधना करने वाले व्यक्ति का जीवन विघ्नों से रहित हो जाता है ।"

८ **विनायक** – विनायक शब्द का अर्थ है विशेष रूप से अपने राष्ट्र समाज एवं परिवार के साथ–साथ अपने आपको भी आगे ले जाने वाला विशिष्ट व्यक्ति, अर्थात् नेतृत्व–शक्ति वाला विशेष व्यक्ति । दूसरे शब्दों में राष्ट्र समाज एवं परिवार के लिये

मार्ग–दर्शन में कुशल व्यक्ति ।

नायक शब्द का ही पर्यावाची शब्द है "नेता" किन्तु आज के वर्ग के जीवन की ओर देखने पर उनके कारनामों पर दृष्टि पात करने पर हमें नेता (अर्थात् आगे ले जाने वाला) शब्द से कुछ अरूचि सी होने लग गई है, अतः गणेश जी के नामों द्वारा व्यक्त "नेता" के साथ 'वि' उपसर्ग लगा दिया गया है, जिसका विशेष भाव यह है कि विशिष्ट गुणों से सम्मन्न नेता–जैसे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल, सुभाष चन्द्र बोस आदि । इन में कुछ विशिष्ट गुण थे, देश भक्ति, स्वार्थ, त्याग, परोपकार आदि । ऐसे विनायक ही देश, जाति और समाज की विघ्नों से रक्षा कर सकते हैं ।

९ धूम्र–केतु – धूम्र–केतु का पहला अर्थ है पुच्छलतारा । जैसे पुच्छल तारे के उदित होने पर विपदाओं के आने की सम्भावना से सामान्य जनता भयभीत हो जाती हैं, वैसे ही जिसके दर्शन मात्र से देश जाति और समाज को कष्ट पहुंचाने वाले विरोधी तत्व भयभीत हो जाते हैं उस व्यक्ति को "धूम्र–केतु" कहा जाता है ।

अभिप्राय यह भी हो सकता हैं कि जैसे धूएं की गति सदैव ऊर्ध्वगामिनी होती हैं, वैसे ही जिसके केतु अर्थात् यश की गति सदैव ऊर्ध्वगामिनी होती है, जो अपने अच्छे गुणों के कारण ही विख्यात होता है उसे "धूम्र–केतु" कहा जाता है । ऐसे व्यक्ति की सर्भ सहायता करते हैं, अतः उसके जीवन में विघ्नों का प्रवेश नहीं हो पाता है ।

१० गणाध्यक्ष – गणाध्यक्ष शब्द का अर्थ है अपने समूह का प्रमुख अर्थात् जिसकी आज्ञा एवं अनुशासन को सभी सादर स्वीकार करते हों इस प्रकार अनुशासन, शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति ही "गणाध्यक्ष" कहलाता है । जहां सभी व्यक्ति बड़ों की आंज्ञा का पालन करते हों ओर अनुशासन में रहना पसन्द करते हों, संगठित हों वहां विघ्न आते हुए भयभीत होते हैं, गणाध्यक्ष के पास विघ्न नहीं आ सकते ।

११ भालचन्द्र – जिसके मस्तक पर चन्द्र हो उसे भालचन्द्र कहा जाता है । "चन्द्र" शब्द उज्ज्वल यश और कीर्ति कां प्रतीक हैं, अर्थात् जिसके मस्तक पर यश का टीका लगाा हो उसे भालचन्द्र कहा जाता है ।

भालचन्द्र भगवान् शिव को भी कहते हैं । जो व्यक्ति सबके लिये भालचन्द्र अर्थात् शिव के समान कल्याणकारी हो, शिव का रूप हो, स्वयं नग्र रहकर भी संसार को सब कुछ देने की भावना संजोए रहता हो, उसे "भालचन्द्र" कहा जाता

है । भालचन्द्र व्यक्ति के पास विघ्न कैसे आ सकता है ?

१२ गजानन – सामान्यतः गजानन का अर्थ है जिसका मुख हाथी जैसा हो, किन्तु मानव धड़ पर हाथी का सिर जोड़ने पर बने देवता का नाम है गजानन जिन्हें गणेश भी कहा जाता है । मानवीय शरीर की लघुता और हाथी के शरीर की विशालता का वैषम्य ऐसा है जो आकृति को चिन्तनीय बना देता है ।

यद्यापि विद्वानों ने इस विषय पर अनेक ग्रंथ लिखे हैं, परन्तु सामान्य विचार इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है कि हाथी के समान विशाल भाल वाले व्यक्ति को 'गजानन' कहा जा सकता है । सौभाग्यशाली मस्तक वाला व्यक्ति ही विघ्नों से मुक्त रह सकता है ।

शकुन–शास्त्र के अनुसार सामने से हाथी का मिलना शुभ माना जाता है । इसी प्रकार जिस व्यक्ति का मिलन सदैव कल्याणकी हो उसे "गजानन" कहा जाता है ।

हाथी और लक्ष्मी का सम्बन्ध प्रसिद्ध है, जिसका मस्तक हाथी के समान होगा उसका लक्ष्मी से (धनवान् होने से) सम्बन्ध भी अवश्य होगा, अर्थात् वह धनवान् होगा ही । धन की शक्ति अनेक विघ्नों पर विजय प्राप्त कर सकती है ।

गणेश जी के नामों को गुणापेक्षित मानकर उपर्युक्त विचारों के अनुसार उनके गुणों को अपने जीवन में उतारने वाले व्यक्ति के पास विघ्न नहीं आ सकते हैं, ऐसा मेरा विश्वास है ।

मेरा विश्वास कहां तक उचित है ? इस पर विद्वानों के विचार आमन्त्रित हैं ।

काठगढ़ महादेव मन्दिर – परिचय

ऊँ नम– शिवाय

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरूर्देव महेश्वरः ।

गुरूः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।

वेदों, पुराणों, श्रुतियों और स्मृतियों में भारतवर्ष को देव भूमि, पुण्य भूमि और कर्म भूमि कहा गया है । भारत की भूमि को ऋषियों, मुनियों, सिद्धों, सन्तों, फकीरों और महात्माओं ने अपने तपोबल, योगबल, व विभित्र प्रकार की नवधा भक्ति से पवित्र, सुशोभित व विश्व वन्दनीय भूमि बनाया है । इस भूमि के कण–कण में भगवद् भक्ति, अध यात्मिकता व विश्व कल्याण का पवित्र स्वर गूंजता है । भारत में स्थान–स्थान पर गगनचुम्बी मनोहारी व अज्ञानता को नष्ट कर के ज्ञान का उदय करने वाले वन्दनीय मन्दिर मिलते है ।

भारत भूमि देवी–देवताओं और ऋषि–मुनियों की धरती ही है परन्तु विशेषकर हिमाचल प्रदेश (हिमालय) तो देवताओं, मुनियों, सिद्धों, महात्माओं, फकीरों व दिव्यात्माओं का मूल स्थान है । यहां प्रकृति की शान्त गोद में बैठकर इन विभूतियों ने दिव्य शक्तियो प्राप्त की । जब इन्हें ईश्वरीय शक्ति का प्रकाश हुआ तथा इन्होंने भारत के ही नहीं अपितु समस्त को "सर्व सु–सुखिन सन्तु.........." का मूल मंत्र प्रदान किया । उन्होंने लोगों को बताया कि ईश्वर एक है (एक सद् विप्रा वहुधा वदन्ति) और उसे विभित्र नामों से पुकारा जाता है ।

हमें परोपकार, दया, सहानुभूति, ईश्वर भक्ति और मानवता के कल्याण के लिये कार्य करना चाहिये । महर्षि व्यास जो स्वयं कहते है कि –

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।

परोपकाराय पुण्याय, पापाय परपीडनम ।।

अर्थात् अठारहाँ पुराणों में व्यास जी ने दो ही शब्द कहे है । परोपकार से पुण्य होता है और दूसरे को दुःख देना सबसे बड़ा पाप है मनुष्य का काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, हर्ष को छोड़कर अपने आपको भगवान के प्रति समर्पित कर देना चाहिये । भगवद् भक्ति ही जीवन की सफलता है ।

इन दिव्य शक्तियों के अद्भुत तप, योग, संयम व नवधा भक्ति से हिमाचल में स्थित पर्वत, गिरि, गुफा भी अध्यात्मिकता, मानवता व ईश्वर भक्ति का मौन उपदेश करते हैं । ये मौन गिरि, पर्वत, गुफा जैसे मनुष्य को कह रहे हों कि– हे मनुष्यो ! हमने दिव्यात्माओं के संर्सग से अपने आपको कृत्तार्थ कर लिया है । अब तुम भी उनके तप स्थान की पवित्र धूलि मस्तक पर चढाकर अपना जीवन पवित्र कर लो ।

हिमाचल में चिन्तपूणी, नैनादेवी, चामुण्डा देवी, ज्वालामुखी, कांगड़े वाली और महाकाली के भव्य मन्दिर हैं, तो मणिमहेश, वैद्यनाथ (बैजनाथ) शंकर, शिव और मणिकर्णेश्वर के भी मनोहारी मन्दिर हैं । हिमाचल के चप्पे–चप्पे में शिव, शिवा श्री

राघवेन्द्र, श्री कृष्ण जी के अन्य ग्रामीण देवताओं के असंख्य देव स्थान हैं । हिमाचल को तैंतीस करोड़ देवी देवताओं ने अपने पुण्य नाम से पवित्र, सुगन्धित व भारत में सर्वश्रेष्ठ होने का गौरव प्रदान किया है ।

ऐसे ही वेद–पुराण वर्णित विश्व का कल्याण व संहार करने वाले सदाशिव भगवान् जी ने अपने पुण्य, पवित्र, अद्भुत व चमत्कारी नाम से हिमाचल प्रदेश के जिला कांगड़ा में स्थित काठगढ़ (इन्दौरा) नामक स्थान को जगत विख्यात, जन–जन में वन्दनीय व प्रातः स्मरणीय होने का गौरव प्रदान किया है ।

श्री सदाशिव महादेव जी के मन्दिर को जाने के लिये दो मार्ग हैं । एक मार्ग पठानकोट–इन्दौरा जाता है । पठानकोट से इन्दौरा नामक कस्बा में प्रवेश स्थान पर चौक है । चौक पर ही बैरियर लगा हुआ हैं, चौक के ठीक नीचे यानि पश्चिम दिशा की ओर जो पक्का मार्ग जाता है वह ही हमारे अराध्य देव के चरणों में हमें पहुंचता है । चौक पर ही **'काठगढ़ का बोर्ड'** लगा हुआ है । इस मार्ग की लम्बाई लगभग 6 कि० मी० है ।

दूसरा मार्ग जालन्धर–पठानकोट राजकीय मार्ग पर मीरथल नामक कस्बा स्थिन है, उसी स्थान से ही काठगढ़ मन्दिर को रास्ता जाता है । मीरथल तक पक्का मार्ग है और आगे का निर्माणाधीन मार्ग है । इस मार्ग की लम्बाई 4 कि० मी० तक है । इस मार्ग से सर्वप्रथम मन्दिर के दर्शन होते है और इन्दौरा–काठगढ़ मार्ग से पहले गांव आता है, तदुपरान्त श्री भगवान् के दर्शन होते है ।

ज्योंहि मन्दिर के समीप श्रद्धालुगण पहुंचते है, त्योंहि उन्हें शान्ति, भक्ति और प्रसन्नता प्राप्त होने लगती है । शिव मंदिर में प्रवेश करने के लिये इन्दौरा मीरथल मार्ग का जो संगम स्थल है वहां पर भव्य मुख्य द्वार है जिसका निर्माण कार्य चल रहा है । वहां से मन्दिर को जाने के लिये सुन्दर पौड़ियां बनी हुई है जिसका सौन्दर्यीकरण कार्य चल रहा है । श्रद्धालुगण जय शिव महादेव भगवान् जी की, जय शंकर की, जय कैलाश वासी, जय गौरीपति के गगन भेदी स्वर से महिमा बोलते हुये मन्दिर की ओर आगे बढ़ते हैं ।

शिव मन्दिर के प्रांगल में प्रवेश करने से पहले, पौड़ियों के समाप्त होते ही दीवार के साथ पानी की टैंकियां बनी हुई है । श्रद्धालुगण यहां हाथ–पैर धोकर, आन्तरिक और बाह्य शुद्धता धारण करके 'हर–हर महादेव, जै शिव शंकर' इत्यादि नामोच्चारण करते हुऐ मंदिर के प्रांगण में पहुंचते हैं । शिव भक्त नतमस्तक होते हुऐ मन्दिर के बरामदे में पहुंचकर 'ऊँ नमः शिवाय' का स्वर घोष करते हैं । बरामदे में श्रद्धालुओं कि सुविधा के लिए मन्दिर के भीतर जाने के लिये लोहे की पाईपें लगी हुई हैं, जिससे भक्तजन सुविधानुसार दर्शन कर सकते हैं । महाशिवरात्री पर्व पर श्रद्धालुओं के शिव महादेव जी के दशनीर्थ हेतु प्रबन्धकारणी सभा ने लगभग दो लाख रू० के लोहे के जंगले तैयार किए हैं । जिस में महिलायों और पुरूषों के मंदिर में प्रवेश करने के लिए सुविधा प्रदान की हैं । सभा की और से पन्द्रहा दुकानों का निर्माण कार्य आरम्भ

किया गया है मंदिर के बरामदे को ज्योंहि श्रद्धालुगण पार करके मुख्य मंदिर के अन्दर प्रवेश करते हैं तब वह ऐसे अनुभव करते हैं । कि वह काल्पनिक नहीं बल्कि साक्षात् भगवान् शिव महादेव जी के दिव्य दर्शन प्राप्त करके अपने अमुल्य जीवन को सफल बना रहे हैं । इस मन्दिर में भगवान् का विशाल लिंग है, जिसके दर्शन करके श्रद्धालुगण अत्यन्त नतमस्तक होकर अपने श्रद्धासुमन श्री भगवान् के चरणों में अर्पित करते हैं ।
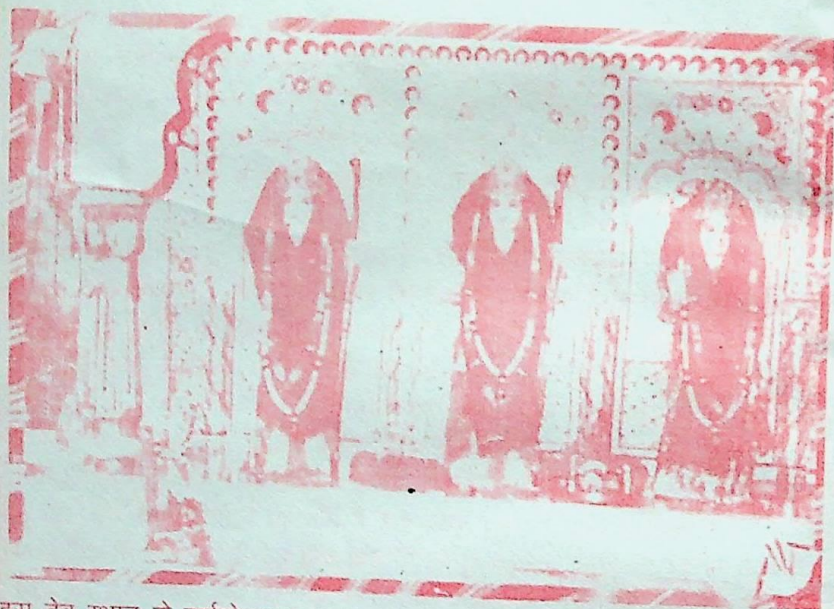
इस देव स्थान के दर्शनोपरान्त श्रद्धालुगण इस देव स्थान के निकट ही नवनिर्मत श्री राम दरबार मन्दिर, श्री राधा-कृष्ण व जगत् दुर्गा माँ के पावन मन्दिर के दर्शन करके अपने जीवन को सफल कर पुण्य अर्जित करते है । यह नव निर्मित मन्दिर प्रबन्धकारिणि सभा ने भक्तजनों की इच्छानुसार दानी भक्तजनों के सहयोग से बनाया है जिसका सौन्दर्यीकरण का कार्य जारी है ।

श्री राधा कृष्ण

जगत् जननी दुर्गा माँ
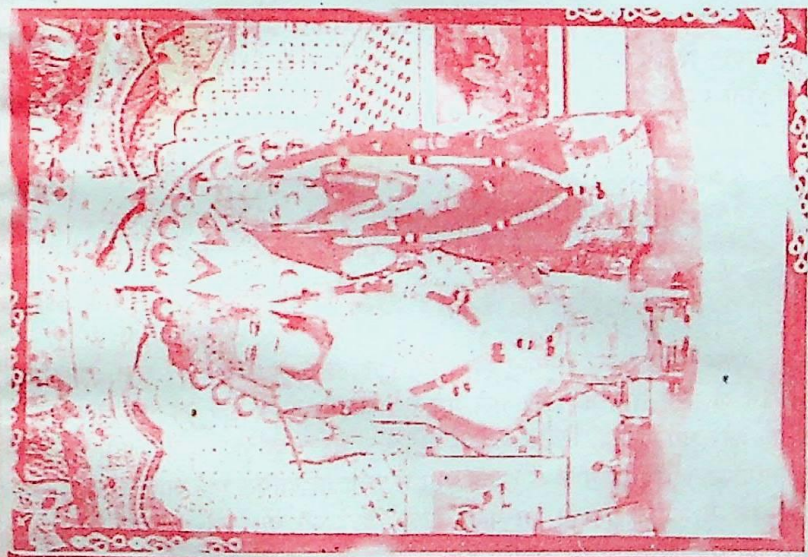
स्वयं भू–प्रकट शिवलिंग का मातृ–लोक में प्रकट होनो

इस मन्दिर में शिव जी का विशाल लिंग है । यह शिवलिंग दो भागों में विभाजित है । एक भाग को मां पार्वती व दूसरे भाग को भगवान् शिव के रूप में माना जाता है । यह इस स्थान की अत्यन्त विशेषता है कि इन दो भागों के बीच का अन्तर ग्रहों व नक्षत्रो को अनुरूप घटता–बढ़ता है । शायद यह विशेषता आदिकाल से ही चली आ रही है या कि आज के युग को अपना प्रत्यक्ष प्रमाण देने हुते भगवान् ने ऐसी विशेषता अपनाई हो । पाठकगण आईये, आपको इस मन्दिर के अद्‌भुत, रोमांचित व श्रद्धास्पद इतिहास, शैली, दन्त कथा अनुसार कि "सत्संगति कथय, किं न करोति पुंसाम" अर्थात् सत्यसंगति से क्या नहीं किया जा सकता अपितु सब कार्य किये जा सकते हैं । ऐसे ही गुरूजनों के आर्शीवाद से व शिव शंकर भोले भंडारी की अपार कृपा से अवश्य कुछ न कुछ लिखने में समर्थ हूंगा । इस मन्दिर का इतिहास दन्त कथाओं एवं किवदन्तियो के अनुसार काफी मात्रा में पुराणों से जुड़ा हुआ है जैसे कि शिव पुराण में वर्णित कथाअनुसार श्री ब्रह्मा जी व विष्णु जी का आपस में बड़प्पन बारे में युद्ध हुआ तो दोनों एक–दूसरे पर भयानक अस्त्रों –शस्त्रों से प्रहार करने लगे । तब भगवान शिव शंकर आकाश मण्डल में छिपकर ब्रह्मा एवं विष्णु का युद्ध देखने लगे । दोनों एक–दूसरे के वध की इच्छा से महेश्वर और पाशुपात अस्त्र का प्रयोग करने का प्रयासरत थे, जिनके प्रयोग होते ही त्रैलोक्य भस्म हो जाता । इस महाप्रलय रूप को देखकर भगवान् शंकर जी से रहा ना गया ।

उनका युद्ध शांत करने के लिऐ भगवान् शंकर महा अग्नि तुल्य एक स्तम्भ के रूप में उन दोनों के बीच प्रकट हुये । इस महा अग्नि के प्रकट होते ही ब्रह्मा और विष्णु जी आपस में कहने लगे कि यह अग्नि स्वरूप स्तम्भ क्या है ? हमें इसका पता लगाना चाहिये ।

ऐसा निश्चय कर भगवान् विष्णु जी शुक्र का रूप धारण कर उस स्तम्भ का मूल देखने के लिए नीचे की ओर चले गये तथा ब्रह्मा जी ने हंस का रूप धारण कर ऊपर की ओर गमन किया । विष्णु जी पाताल में बहुत दूर तक चले गये परन्तु जब बहुत समयोपरान्त भी स्तम्भ के अन्त का पता न चला तो वापिस चले आए । उधर ब्रह्मा जी आकाश में आकर केतकी का फूल लेकर विष्णु जी के पास आए तथा झूठ ही विश्वास दिलाया कि स्तम्भ का अन्त मैं देख आया हूं, जिसके ऊपर केतकी का फूल था । तब भगवान् विष्णु जी ने ब्रह्मा जी के चरण पकड़ लिये ।

ब्रह्मा जी के इस छल को देखकर आशुतोप भगवान् शंकर भोले भंडारी महादेव को साक्षात प्रकट होना पड़ा और विष्णु जी ने उनके चरण पकड़ लिये । विष्णु

जी की इस महानता से शिव महादेव जी प्रसन्न हो गए । उन्होंने कहा कि हे विष्णु तुम बड़े सत्यवादी हो ! अतः मैं तुम्हें अपनी समानता प्रदान करता हूं । ब्रह्मा तथा विष्णु जी के मध्य युद्ध शांत करने के लिये जो भगवान् शिव को महा अग्नि तुल्य स्तम्भ के रूप में प्रकट होना पड़ा, यही काठगढ़ महादेव विराजमान शिव लिंग जाना जाता है ।

भगवान् महादेव की जय

अच्छे को अच्छा मिले, मिले मीत को मीत,
मोती में मोती मिले, मिले कीच में कीच ।।
बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताए,
काम बिगारे अपना जग में होत हंसाए ।।

(गिरधार कोनराए)

काठगढ़ महादेव की चमत्कारिक महत्ता

आदिकाल से ही भगवान् शिव अपने भक्तों की मनोकामनायें पूरी करने में उतावले रहते हैं, व समय–समय पर अपने भक्तों की इच्छापूर्ति व भक्ति भावना को सुदृढ़ करने के लिए चमत्कारिक रूप से वरदान (दृष्टांत) देने वाले भोले भंडारी कहे जाते हैं । अपने इसी भोलेपन के द्वारा भक्तों की भूलों को भी सुधारने में भी दयावान् रहते हैं । प्रायः भगवान् शिव अपने भक्तों को उतवालेपन में वरदान देकर अपने आप को भी कष्ट में डालने से पीछे नहीं हटे जिस सम्बन्धी अनेकों घटनाएं च चरित्र पौराणिक कथाओं में उल्लेख मिलता है । इसी भांति काठगढ़ महादेव आद् स्वयं भू–प्रकट शिवलिंग के रूप में आज के युग में भी अपनी दयालुता व चमत्कारिता के लिए विख्यात हैं । ऐसे ही कई उदाहरण हैं जो कि वर्तमान समय में उजागर हुये हैं ।

एक बार एक साधु महात्मा जो कि समीपवर्ती गांव में डेरा डाले हुये थे, इस देव स्थान में माथा टेकने के लिये आये तो उस समय पुजारी मन्दिर में उपस्थित नहीं था । काठगढ़ महादेव के शिवलिंग रूप के आगे अज्ञात भक्तजनों द्वारा कुछ धन–राशि चढ़ाई हुई थी । ज्ञानी महात्मा ने अज्ञानतावश उस राशि को पंचभूतों में से एक भूत लोभ के वशीभूत होकर मन्दिर में अन्दर व बाहर इधर–उधर किसी को उपस्थित न पाकर धन राशि को उठाकर चलता बना । वह महात्मा अज्ञानता वश भूल गया कि उसने जो कृत्य किया हैं, कहां तक उचित हैं? कुछ समय बीत गया वही महात्मा अचानक एक दिन इसी देव स्थान पर स्वयं आया व नतमस्तक होकर काठगढ़ महादेव से अपनी भूल के लिये ऊंची–ऊंची आवाज में आर्तनाद करने लगा, जिसकी ध्वनि सुनकर इर्द–गिर्द के कुछ लोग व कुछ भक्तजन जो दर्शनार्थ आये हुये थे भौचक्के रह गये कि यह क्या मामला है? किसी की समझ में कुछ ना आया । साधु महात्मा की आंखों में अविरल आँसुओं की धारा व वाणी में क्षमा याचना के स्वर प्रस्फुटित हो रहे थे । आखिर एक भक्त ने महात्मा से पूछ ही डाला कि महात्मा जी ऐसा क्या हुआ जो आप की दयनीय अवस्था प्रकट कर रही है ? हम जनसमूह को बताइये ? उस महात्मा ने अपनी की हुई भूल का सारा वृतांत भक्त न महात्मा से पूछ ही डाला कि महात्मा जी ऐसा क्या हुआ जो आप की दयनीय अवस्था प्रकट कर रही है ? हम जनसमूह को बताइये ? उस महात्मा ने अपनी की हुई भूल का सारा वृतांत भक्तों के समक्ष बताया व अपनी भूल को स्वीकार करते हुये भगवान् काठगढ़ महादेव के अपर्ण उठाई हुई राशि से अधिक राशि व प्रसाद स्वयं बनाकर भगवान् शिव को अर्पण करते हुये भक्तजनों में बांटा तथा अपने अपराध की क्षमा याचना की । भोले नाथ ने अपने भोलेपन की महत्ता अनुसार उस समय साधु–महात्मा को क्षमा दान दे दिया ।

इसी प्रकार से काठगढ़ महादेव की दयालुता व चमत्कारिता की प्रसिद्धि

दूर–दूर तक फैल गई । काठगढ़ महादेव भक्त जनों के आस्था रूप बन गये । मुकेरियां गांव से एक वृद्धा हरवंश कौर जो कि भगवान् शिव को अनन्य भक्त थी एक दिन उसके गुरू ज्वाला सिंह ने स्वप्र मे आकर कहा (जो कि उस समय समा चुके थे) कि अगर तुम अपनी मनोकामना पूर्ण करना चाहती हो तो काठगढ़ महादेव के दर्शनार्थ काठगढ़ की ओर प्रातः होते ही ॐ नमः शिवाय मन्त्र का मन्त्र का जाप करते हुये चले जाओ तथा उस स्थान का दृश्य इस प्रकार से होगा कि काठगढ़ महादेव का स्थान एक ऊंचे टीले पर आदम् कद शिवलिंग के रूप में होगा जिसका दर्शनार्थ तुझे यात्रा में एक छम्मधारा को (वर्तमान नाम छौंछ खड्ड) पार करना होगा । उस वृद्धा ने उसी स्वप्र अनुरूप प्रायः उठकर काठगढ़ महादेव के दर्शनों के लिये यात्रा के लिए प्रस्थान किया । जब वह काठगढ़ महादेव के स्थान में पहुंची तो उस समय मन्दिर के बरामदे मे श्रावण मास के महीने में राम चरितमानस का अखंडपाठ चल रहा था । वृद्धा हरवंश कौर अपने पुत्र सहित मन्दिर में आई हुई थी । उसने अपने साथ–घटित सारी घटनाओं को तत्कालीन भक्तजन समूह को बताया कि मेरी चिरकाल से चली आ रही तपस्या व मनोकामना आज यहां पहुंचते काठगढ़ महादेव की कृपा से पूर्ण हो गई । उस वृद्धा ने बड़े ही श्रद्धाभाव से भगवान् काठगढ़ महादेव की पूजा अर्चना की और अपने स्थान की ओर ॐ नमः शिवाय का मन्त्र उच्चारण करती हुई चली गई ।

इस घटना को सुनकर जनसमूह में उपस्थित भक्तजनों ने यह सोचा कि स्वंय भू–प्रकट काठगढ़ महादेव को अपने प्रचार व प्रसिद्धि हेतु लोगों के स्वप्न में आकर स्वयं कार्य करना पड़ रहा है । यह सोचकर जनसमूह में उपस्थित लोगों ने एक प्रबन्धकारिणी सभा का गठन किया ।

इसी प्रकार उपरोक्त अन्य चमत्कारिक घटनाओं की तरह एक दृष्टांत उजागर हुआ कि कुछ श्रद्धालुगण जो कि दूरस्थ स्थान से आये थे । वे भगवान् काठगढ़ महादेव के शिवलिंग को स्नान करा रहे थे तो उनके साथ आये किसी एक नवयुवक द्वारा जो कि आधुनिक चकाचौंध भावना से ग्रस्त था । उसने भी अज्ञानता में आकर भगवान् के शिवलिंग रूप के आकार को छूने के पश्चात किसी तेज हथियार से खुरचा (कुरेदा) व अपने साथ आये हुये आस्थावान श्रद्धालुओं की हंसी उड़ाने लगा । सभी भक्तजन काठगढ़ महादेव के दर्शन के उपरान्त अपने निवास स्थान को प्रस्थान कर गये । लेकिन उस समय आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब वही भक्त मण्डली (भक्तजनों का समूह) कुछ ही समय में वापिस मन्दिर प्रांगण में दाखिल हुए । उनमें से एक लड़का पीड़ा से कराह (तड़प) रहा था । उन लोगों ने मन्दिर प्रांगण में उपस्थित लोगों को बताया कि कुछ दूर जाने पर यह लड़का रोने चिलाने लगा तो हम वपिस आ गये । वो लड़का रोता हुआ बता रहा था कि मेरे पूरे शरीर में ऐसे चुभन हो रही है जैसे कोई तेज हथियार से खरोंच रहा हो । ज्यों ही लड़के को शिवलिंग के पास लेटा कर सब क्षमा याचना करने लगे तथा जलैहरी का जल उस नवयुवक पर छिड़का तो धीर–धीरे उसकी पीड़ा शांत हो गई ।

कुछ समय के बाद पीड़ित नवयुवक उठकर बैठ गया तथा बार बार आद शिवलिंग के आगे नतमस्तक हो मानो मन ही मन प्रभु से आगे के लिए ऐसी गलती न करने की प्रतिज्ञा करने लगा । उपस्थित जन–समूह प्रभु के आगे नतमस्तक होते हुए जय शिव शंकर तथा जय भोले बाबा बोलते हुए क्षमा याचना करने लगे । भगवान् भोले भंडारी का क्रोध शांत हुआ । उनके परिवारजन अथवा साथी प्रसाद लाए और बांटने लगे । बाद में सभी ने जय घोष करते हुए हंसी–खुशी अपने गृह–निवास को प्रस्थान किया ।

आज के युग में भी ऐसी चमत्कारी महतत्ताओं में समृद्ध आद शिव लिंग काठगढ़ महादेव असंख्या भक्तजनों की मनोकामनाएं पूरी करते हैं । कई महात्मा विद्वान इन्हें तांत्रिक शिव लिंग भी कहते है ।

तत्कालीन राजा द्वारा पूजा अर्चना

समय बड़ा परिवर्तनशील है । आदिकाल से प्रकट इस शिव लिंग में भौगोलिक परिस्थितियों के कारण परिवर्तन होते रहे होंगे । भू- स्खलन (भूकम्प) आदि से यह स्थान कई बार उथल-पुथल हुआ । इस स्थान पर कुछ भूमि ऊँचे टीलों तथा कुछ भूमि गहराई अवस्था में बदल गई, जिसके परिणामस्वरूप यह अग्नितुल्य स्वयं भू-प्रकट शिव लिंग (स्तम्भ) नजरअंदाज हो गया । धीरे-धीरे हिन्दु धर्म दबता गया और विदेशी आक्रमणकारी इस सनातन धर्म को तुच्छ समझने लगे । हिन्दु देवी-देवताओं का अपमान होने लगा तो तिम्र श्लोक के अनुसार जैसे भगवान् श्री कृष्ण जी ने गीता में श्री अर्जुन जी से कहा है कि :-

यदा यदा हि धर्मस्य गलार्नि भवति भारत ।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदा त्यान सृज़ाम्यहम् ।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ।

हे भारत जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब ही मैं अपने रूप को रचाता हूं । साधु पुरूषों का उद्धार करने के लिये और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिए तथा धर्म को स्थापित करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट होता है ।

उपरोक्त श्लोक के अनुसार ही भगवान् का सिंहासन डोलने लगा । कहा जाता है कि इसी स्थान पर उन दिनों गुज्जर लोग निवास किया करते थे यहां वे दही की मटकी (चाटी) रखकर दही बिलौते थे । उस बर्तन के नीचे की भूमि ऊपर को उठी हुई सी प्रतीत होती थी । गुज्जरों ने जब भूमि को उखाड़ कर देखा तब उन्हें बड़ा पत्थर सा मालूम होता दिखाई पड़ा । गुज्जर अन्य भारी पत्थर से उसे नित्य दबाते (तोड़ते) रहते और वह फिर वैसे का वैसा रहता । वे अल्प बुद्धि लोग इस शिव लिंग को एक सधारण पत्थर ही समझते रहे ।

तत्कालीन राजा के गुप्तचरों को इस बात का पता चला । गुप्तचरों ने राजा को सारा वृतान्त विस्तार से सुनाया । राजा ने भी बिना सोचे विचारे अपने राज कर्मचारियों को आदेश दिया कि उस पत्थर को उखाड़ कर ले आओ । राज कर्मचारियों ने राजा के आदेशानुसार इस स्थान की खुदाई आरम्भ कर दी । कहते है कि किं ज्यों-ज्यों ही खुदवाई होती गई शिव लिंग भूमि के बीचों बीच स्तम्भ के रूप में ही गहराई तक नजर आता गया । काफी गहराई तक खुदाई करने के उपरान्त बड़े बड़े

मकौड़े निकले । यह मकौड़े जिस को भी काटते वह तुरन्त ही मर जाता था । (प्रमाण के तौर पर अब भी इस पावन स्थान पर मकौड़े पर्याप्त मात्रा में शिव गणों की भांति विद्यामान हैं ।) जब यह सूचना राजा को पहुंची कि इस स्तम्भ रूपी शिला का कोई अन्त नहीं आ रहा व राज्य कर्मचारियों की कितनी प्राण हानि हो गई है । तब राजा राज पंडितों, विद्वानो तथा फकीरों एवं धर्म देवताओं के साथ इस स्थान पर स्वंय पहुंचा । धर्म देवताओं ने राजा को कहा कि हे राजन् ! अज्ञानता से यह बड़ा भारी पाप हो गया है । यह कोई साधारण पत्थर नहीं अपितु ब्रह्मा जी तथा विष्णु जी के युद्ध के समय अग्नितुल्य के रूप में प्रकट सदा शिव रूप भगवान् शंकर महादेव जी का का आद् शिव लिंग है । भगवान् शिव शंकर महादेव भोले भण्डारी जब रूष्ट हो जाते हैं तब सृष्टि का प्रलय कर देते हैं । राजा ने हाथ जोड़ व भयभीत होकर क्षमा याचना करते हुये विद्वानों से कहा कि "हे धर्म देवताओं ! मैंने अज्ञानतावश महापाप किया है अब मुझे कोई ऐसा उपाय बताओ जिससे सदाशिव महादेव मेरे अपराध क्षमा कर दें । मैं आप द्वारा दिये गये प्रत्येक परापर्श को नतमस्तक होकर मानूंगा ।"

विद्वानों ने परस्पर विचार विमर्श के पश्चात् कहा, " हे राजन्! शिव द्रोही, शिव निंदक की त्रिलोकी में भी रक्षा करने में कोई समर्थ नहीं है । शिव जी के प्रति जो अपराध करता है वह अपने लिए तीनों लोकों से कष्ट लेता है राजन् यद्यपि आपने बड़ा भारी अपराध किया है परन्तु पश्चाताप के कारण निम्न उपायों से भगवान आशुतोष जी अवश्य तुम्हारे अपराध क्षमा कर देंगे ।"

राजन् श्रावण मास में प्रतिदिन प्रातः स्नानोपरान्त दूध, दही, गंगा जल, विल्व पत्र आदि से विधिपूर्वक इस शिव लिंग की पूजा अर्चना करें एवं महापंडितों से महामृतुन्जय का जाप करवा कर यज्ञ करो । पूरा श्रावण मास भूमि शयन सत्य भाषण, वेद शास्त्र की मर्यादा अनुसार शिव स्तुति करते हुये पंचाक्षर मन्त्र "ऊँ नमः शिवाय" का जाप करो । श्रावण मासोपरान्त विधिपूर्वक हवन करवाओ । ऐसा करने से सब जगत का कल्याण करने वाला भगवान् सदाशिव अवश्यमव तुम्हारा भी कल्याण करेंगे ।

कहते हैं कि तत्कालीन राजा ने ज्यों हि विद्वानों द्वारा बताई गई विधि से नित्य श्रद्धापूर्वक पूजा अर्चना प्रारम्भ की त्योंहि धीरे धीरे नित्य–नित्य प्रति यह शिव लिंग ऊपर को बढ़ता गया । ज्योंहि श्रावण मास की नित्य–प्रति की पूजा अर्चना के पश्चात् राजा ने हवन यज्ञ आदि कार्य से निवृत हुए तो तब यह शिव लिंग लगभग आदमकद बढ़ चुका था और आज तक उतना ही इसी वर्तमान अवस्था में स्थिर खड़ा है ।

भगवान् काठगढ़ महादेव की जय

भरत द्वारा पूजा–अर्चना

काठगढ़ मन्दिर की महत्ता बारे एक अन्य कथानुसार बताया जाता है कि त्रेता युग में भगवान् श्री रामचन्द्र जी के छोटे भाई भरत शिव भक्त थे । वे जब भी अपने ननिहाल कैकय देश (कश्मीर) को जाते थे तो काठगढ़ में विश्राम करते थे क्योंकि उस समय की पुरानी जनरैली सड़क के अवशेष वर्तमान व्यास नदी के पुल के समीप से मीरथल गांव में मिलते हैं । महाराजा भरत जी यहां के पवित्र जल से स्नान करने के उपरान्त अपने राजपुरोहितों व मंत्रियों से सहित इस आद् शिव लिंग की पूजा करते थे । महाराजा भरत का अपने ननिहाल जाने का कार्यक्रम जब भी बनता था तो राज कर्मचारीगण कई दिन पहले ही इस पावन स्थल की सफाई आदि का प्रबन्ध कर देते थे । भरत जी यहां कुछ दिन ठहर कर शिव भक्ति का पुण्य लाभ प्राप्त करते थे ।

सिकन्दर का वापिसी स्थल

ऐतिहासिक तौर पर प्रसिद्ध विश्व विजेता मकदूनियां का राजा सिकन्दर का इस मन्दिर के साथ सम्बन्ध जुड़ा हुआ है । जन श्रुतियों के अनुसार, सिकन्दर इस देव स्थान से वापिस चला गया था । प्रसिद्ध इतिहासकार श्री सुखदेव सिंह चरक (प्रोफेसर जम्मू विश्व विद्यालय) ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक "हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ हिमालयन स्टेटस" में सिकन्दर के बारे में लिखा है कि वह दिग्विजय करता हुआ जब काठगढ़ पहुंचा तब उसकी सेना का उत्साह समाप्त हो गया और वह इसी स्थान से वापिस स्वदेश लौटा था । पठानकोट के ही श्री प्रवीण गुप्ता ने अपनी पुस्तक "अपना शहर पठानकोट" में लिखा है कि सिकन्दर महान् मैसिडोनिया (मकदूनिया) का राजा था । उसने अपने दिग्विजय अभियान में फरवरी–मार्च 326 ई० पू० ओहिन्द के निकट नावों के पुल से सिन्धु नदी पार कर भारत पर आक्रमण किया । उस समय पंजाब तथा सिन्ध में अनेक छोटे–छोटे राज्य थे । जो आपस में द्वेष की भावना रखते थे । इनमें से कुछ राजतन्त्र, कुछ गणराज्य तथा कुछ नगर राज्य थे ।

सिकन्दर का अन्तिम कैम्प व्यास नदी के किनारे लगा माना जाता है जो सम्भवतः मीरथल के पास है । व्यास नदी की ओर मार्च करते हुये सिकन्दर ने इन कम ऊंची पहाडियों को छुआ । उसने सम्भवतः जो मार्ग अपनाया वह अखनूर से साम्बा शकरगढ़ मीरथल की ओर जाता है । यूनानी आक्रमणकारी का भारत विजय अभियान पठानकोट के पास आकर ठण्डा पड़ा । यद्यपि इस क्षेत्र में हुये युद्ध में सिकन्दर विजयी रहा परन्तु यहां के लोगों की देश–प्रेम तथा वीरता को देखते हुए उसके सैनिकों ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया । परिणामस्वरूप सिकन्दर को अपनी योजना का बदलना पड़ा ।

कहा जाता है कि उस समय विश्व विजेता सिकन्दर की सेनाओ का पड़ाव इस स्थान पर ही था । प्रातः–काल वह जब सो कर उठा तो गूढ़ विचारों में खो गया । उसके मस्तिष्क में यह विचार घर कर गया कि मेरे बहादुर सैनिकों ने इतना विस्तृत विश्व जीतने पर इस स्थान पर आकर आगे बढ़ने से जो इंकार किया है वह इस शिव लिंग की वैदिक महानता के कारण हुआ है । इसलिये इस शिव लिंग के चारों ओर की जगह को समतल करके मोटी चार दीवारी करवाई, बैठने के लिये व्यास नदी की ओर चार दीवारी के कोने पर अष्टकोणीय चबूतरे बनाये ताकि यात्री यहां से व्यास का प्राकृतिक नैसर्गिकता का आनन्द अनुभव कर सकें तथा यूनानी

सभ्यता की छाप स्थापित की जावे ताकि आने वाली पीढ़ियां इस स्थान को सिकन्दर की वापिसी स्थल के रूप में स्मरण करती रहें । जोकि आज भी मौजूद है ।

महाराजा रणजीत सिंह द्वारा महादेव मन्दिर का निर्माण

इस पावन देव स्थान की पूजा–अर्चना वैदिक काल से होती आई है. परन्तु यह स्वयं भू–प्रकट (अपने आप धरती से प्रकट) शिव लिंग खुले आकाश में सर्दी–गर्मी को सहन करते हुये श्रद्धालुजनों को आर्शीवाद देता रहा । ज्यांहि परम–धर्मो हिन्दु–सिक्ख समानता के प्रतीक महाराजा रणजीत सिंह जी ने राजगद्दी संभाली तो अपने सम्पूर्ण राज्य में भ्रमण किया तथा राज्य सीमा के अन्तर्गत आने वाले सभी धार्मिक स्थलों के सुधार के लिये सरकारी कोष से सेवा करने का संकल्प किया । इस आद् शिव लिंग के दर्शन करके महाराजा रणजीत सिंह जी का हृदय प्रफुल्लित हो गया । उन्होंने तुरन्त इस आद् शिव लिंग पर शिव मन्दिर बनवा कर विधिपूर्वक पूजा–अर्चना की । कहा जाता है कि इस स्थान के निकट प्राचीन कुएं का जल महाराजा रणजीत सिंह अपने काल में शुभ कार्य प्रारम्भ करने के लिये यहां से मंगवाते थे क्योंकि यह जल बड़ा पावन व रोग निवारक माना जाता रहा है । कई साधु महात्मा इस देव स्थल को तान्त्रिक स्थान मानते है । उनका कथन है कि यह विशाल शिव लिंग अष्टकोणीय है । मुख्य मन्दिर, समीपवर्ती कुआं व बडी समाधि तथा परिक्रमा में बना हुआ चबूतरा अष्टकोण है । यह शिव मंदिर एक पहाडी पर स्थित है और मंदिर की कुछ ही दूरी पर छोंछ खड्ड पश्चिम दिशा की ओर बहती है । दक्षिण दिशा में व्यास नदी आकर्षक व मनोहरी दृश्य दर्शाती हुई एक–दूसरे में विलीन हो जाती है । इस मन्दिर के प्रांगण में खडे होकर दूर–दूर तक का मैदानी भू–भाग

दिखाई देता है जिसका भक्तजन आनन्द लेते हुये तथा प्रभू चरणों में श्रद्धा सुमन भेंट करते हुये अपने भावी जीवन को सफल करने की कामना करते हैं । इस देव स्थान की पवित्रता व महत्ता एवं शक्ति के अनुरूप ही मान्यता व प्रसिद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है ।

काठगढ़ गांव का नामकरण

किवदंतियों के अनुसार काठगढ ग्राम वर्तमान चार पांच गांवों का सामूहिक कस्बा था, जिसमें इन्दौरा बैरियर से व्यास नदी के तटवर्ती क्षेत्र घनी आबादी में बसा था । उदाहरण तौर पर इस कस्बे की विशालता के बारे में कहा जाता है कि यहां पर 22 तेल निकालने वाले कौल्हू चला करते थे । इस नगर के एक भाग में मुकद्मे के फैसले होते थे तो दूसरी ओर वर्तमान गांव काठगढ़ में अपराधियों को काठ लगाया जाता था । इसलिए इस गांव का नाम काठगढ़ पढ़ गया । इन दोनों स्थानों के प्रमाण अब भी दिखाई देते हैं । अब भी इन क्षेत्रों की भूमि की खुदाई की जावे तो पुरानी वस्तुओ के अवशेष प्राचीन समय की ईटें, मिट्टी के बर्तन,विभिन्न प्रकार की हड्डियों व मकानों की नीवे भूमि के निचले भागों में मिलती हैं । इन अवशेषों से प्रमाणित होता है कि इस देव स्थान के इर्द–गिर्द के क्षेत्र में काफी उथल–पुथल हो चुकी है परन्तु यह पावन स्वयं भूमि से प्रकट शिव लिंग हर प्रकार की भौगोलिक स्थितियों से गुजरता रहा और जानकर श्रद्धालू भक्त इसकी अराधना करके मन वांछित फल प्राप्त करते रहे ।

प्रबन्ध–संचालन :–

आदिकाल से इस प्रकार निरन्तर चले आ रहे इस स्थान की प्रगति न हो सकी जो कि होनी चाहिये थी । इसके हजारों वर्ष बाद प्रकट हुए स्थान इतनी अधिक प्रसिद्धि पा चुके हैं । परन्तु इस स्थान पर अपनी सीमित अवस्था में भक्त श्रद्धालू आते रहे और भोजकी प्रथा के अनुसार इसकी अवस्था के सुधार के लिए कोई ध्यान न दिया गया । वर्ष में एक बार को लोंग महाशिवरात्रि पर्व को मनाने हेतु इस स्थान पर सामूहिक रूप से एकत्रित होते रहे ओर उन द्वारा चढाया हुआ धन (चढ़ावा) पुजारी अपने परिवार पोषण में ही व्यय करते रहे । समय ने करवट बदली । प्रभू प्रेरण से इस मन्दिर की चर्तुमुखी उन्नति के लिए इस स्थान के इर्द–गिर्द के गांवों के लोगों ने इकट्ठे होकर वर्ष 1984 में प्राचीन शिव मन्दिर सुधार सभा का गठना किया ।

गठन किया और 1986 में विधिवत रूप से 'प्राचीन शिव मन्दिर प्रवन्धाकारनी सभा से नाम पंचीक्रण करवाया गया । इस सभा में लगभग 350 सद्धस्य हैं जो नियमित रूप वार्षिक मैम्बर शिप देते हैं । वर्ष में एक सामन्य बैठक तथा

प्रत्येक तीन वर्ष कें वाद सामन्य बैंठक में प्रबन्धक कमेटी का चुनाव होता है आय व्यौरा मासिक तथा वार्षिक तैयार किया जाता है । हर वर्ष का अडिट करवाया जाता है । सभा ने प्रबन्ध व्यवसथा को सुचारू ढंग से चलाने के लिये विभिन्न पदो के कर्मचारीयों की नियुक्ति कर रखी है । जो प्रबन्धक सभा के निर्देशानुसार कार्य करते है । पूजा अर्चना के लिए तीन सुयोग्य पुजारी रखें है ।

शिव मंदिर का चढ़ावा भोजकी प्रथा अनुसार पुजारी हो जाता है, जिस वावत न्यायलय में विवाद चला हुआ है । नव निर्मित श्री राम दरबार परिषद का चढ़ावा व दानी भक्तों से पर्ची द्वारा दान तथा सथाई रूप दानियाँ की मासिक दान राशि से प्रवन्धक सभा निरन्तर मन्दिर विकास कार्य करवा रही है । जो इस प्रकार है ।

1. भगवान् शिव तथा नव निर्मित मंदिर में नियमित विधि पूर्वक पूजा अर्चना की व्यवस्था ।
2. इस देव स्थान का प्रचार प्रसार एवं विकास करवाना ।
3. श्रदालू भक्तों के लिए स्वच्छ जल, खान पान और लंगर व्यवस्था ।
4. यात्री जो दूर से आकर ठहिरते है उनके लिए यात्री सदन विस्तर आदि व्यवस्था
5. समस्त मंदिर परिषद को साफ सुथरा रखने की व्यवस्था ।
6. लोगों में धार्मिक भावना एवं राष्ट्रीय भावना बनाये रखने के लिए विभिन्न उत्सवों त्यौहारों एवं सम्मेलनों का अयोजन करना ।
7. स्वास्थ्यसुविधा के लिए मुफत चिकित्सा व्यवस्था ।
8. मैघावी छात्र वृति प्रतियोगिता का प्रत्येक वर्ष आयोजन करना ।
9. मैघावी गरीब वेसहारा बच्चों को वर्दी पुस्तकें और आर्थिक सहायता देना ।
10. गरीब बेसहारा लड़कियों की शादी में सहायता करना ।
11. समाज सुधार एवं जन हित के हर कार्य में बढ़ चढ़ कर भाग लेना आदि ।

दानियों सज्जनों व मंदिर सभा के अनथक प्रयास के कारण यह देव स्थान निरंतर पृगती की और अगृसर है और श्रदालु दर्शनार्थियों का आना जाना दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है । पंजाब व दूसरे प्रातों से आने वाले भक्त श्रदालू (यात्री) छोंछ खड पर पुल ना होने की बजा से काफी परेशान रहते है तथा हिमाचल सरकार से ये छोटा सा अति आवश्यक पुल बनाने के लिए कई बार अनुरोध कर चुकी है परंतु अब तक वह पुज्य मंत्री यह काम न करवा सकी है हर बार झूठे अश्वासन दे दिये जाते है । उम्मीद है अब सरकार शीर्घ उचित पग उठाकर भक्तों की यह मांग पूरी करने में कृत संकल्प होगी ।

जय शिव महादेव हर हर जय महादेव

समापन

शिव महादेव जी की महिमा अपरम्पार है । वेद, पुराण, स्मृतियां और श्रुतियां यद्यमि शंकर जी के महिमा से भरे पड़े हैं परन्तु फिर भी नेति–नेति कह कर अनभिज्ञता प्रकट करते हैं । मैं मूर्ख, अज्ञानी, और अल्पज्ञ यदि कहूं कि शंकर जी की महिमा के बारे में लिखने में समर्थ हुआ हूं, तो यह सिर्फ कपोल कल्पना ही है । महादेव जी की महिमा के बारे में पुराणों में लिखा है ।

चरितानि विचित्राणि गुहयानि च ।
ब्रह्मदीनाञ्च सर्वेषां दुर्विसेयोडसि शंकरः ।।

अर्थात् श्री शंकर जी के चरित्र बहुत ही विचित्र और अत्यन्त गुप्त है । एक साधारण मनुष्य तो क्या सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा जी स्वयं शिव जी के बारे में जानने में असमर्थ हैं ।

यहां शिव जी की महिमा को देवता तक जानते में असमर्थ हैं, वहां शिव जी अत्यन्त कल्याण करने वाले भोले बाबा शीघ्र ही भक्तों पर प्रसन्न होते हैं । जो भक्त श्रद्धा भक्ति से शंकर जी के नाम का उच्चारण करते है शंकर जी उसकी मनोकामना शीघ्र पूरी करते हैं । पुराणों में कहा भी है कि –

महादेव महादेव महादेवेसि कीर्तिनात् ।
वत्सं गौरिव गौरीशो धवन्त मनु धावति

अर्थात् महादेव ! महादेव !! महादेव !!! पुकारने से शिव उसके पीछे ऐसे दौड़ते हैं जैसे बछड़े के पीछे गाय । शंकर भगवान् जी विश्व का कल्याण करने वाले हैं और अन्त में हम प्रार्थना करते है कि –

सर्वे सु–सुखिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्वदेत ।

महाशिवरात्रि – व्रत और उसकी महिमा

देवी पुराण में कहा गया है कि :– भगवान् शिव का ध्यान, उनका जाप, स्नान, भगवान् की वथा का श्रवण आदि इन गुणों के साथ वास अर्थात् इन क्रियाओं को करते हुये काल–यापन करना ही उपवास कर्त्ता का लक्षण है । व्रत रखने वाले व्यक्ति के अन्दर यह लक्षण अवश्य होने चाहिये ।

गीता में भगवान कहते है कि संसारी जनों की जो निशा हैं उसमें संयमी जगे रहते हैं । आत्मदर्शन विमुख प्राणिगत जिस जगदवस्था में जागते हैं मनीषी आत्मदर्शन निरत योगी के लिये वह निशा है ।

अतः सिद्ध है कि विषयासक्त जिसमें निद्रित है उसमें संयमी प्रबुद्ध है । अतः शिवरात्रि में जागरण करना आवश्यक है । शिव–पूजा का अर्थ पुष्प–चन्दन–विल्वपत्र अर्पित कर, शिव नाम का जप–ध्यान करना एवं चित्तवृति का निरोधकर जीवत्मा का मरमात्मा शिव के साथ योग करना है । योग शास्त्र में इन्द्रियों का प्रत्याहार, चित्तवृत्ति का निरोध और महाशिव–रात्रि व्रत वास्तव में एक ही पदार्थ हैं । पंच ज्ञानेन्द्रियां, पंच कर्मेन्द्रियां तथा मन, अहंकार, चित और बुद्धि इनका निरोध करना ही शिवरात्रि व्रत है ।

चाहे शिव–पूजा ज्ञानयोग द्वारा कीजिये अथवा कर्मयोग द्वारा, भक्ति का सम्मिश्रण दोनों में रहेगा । ज्ञान प्रधान या कर्म प्रधान भक्ति द्वारा फाल्गुण–कृष्ण चर्तुर्दशी को शिव को शिव रात्रि व्रत करने से मुक्ति मिलती है ।

ईशान संहिता में लिखा है कि –

जो लोग शिव रात्रि को शिव–भक्ति से प्रेरित होकर सच्चे पवित्र मन से अनशन व्रत कर शिव की पूजा विल्व–पत्र, दुग्ध,पुष्पादि से करते हैं । उनहें भी अपनी भक्ति के अनुसार फल मिलता है । क्योंकि वास्तव में महा शिवरात्रि व्रत का उद्देश्य जीवात्मा का परमात्मा के साथ सहयोग ही हैं ।

अज्ञानवश एक शिकारी ने महा शिवरात्रि व्रत का अनुष्ठान किया था, जिससे शिव गणों ने उसे भी शिवलोक में पहुंचा दिया । यमराज जी ने श्री शंकर जी को बताया कि यह शिकारी अत्यन्त पापी हैं, तब शंकर जी ने यमराज जी को बताया कि इस शिकारी ने महा शिवरात्रि को विल्व–पत्र द्वारा लिंग की उपासना की थी, इसीलिये यह पाप मुक्त हो गया है ।

महा शिवरात्रि के व्रत की अत्यन्त महिमा है । जो श्रद्धालु इस दिन व्रत रखते हैं, वह शिव लोक को जाने के अधिकारी होते हैं ।

51रु दानी सज्जनों की सूची

ढागू पीर :– जोगिन्दर कुमार पप्पु, कुलदीप राज ।

सुन्दर नगर पठानकोट :– मुस्कान कन्फैश्नरी, बलविन्द्र पुरी, डा0 आशोक शर्मा, राजेश गुलेरिया, अभिनव, अभिषेक, राजेन्द्र हांडा, ज्ञान चन्द, साधू राम, जनक राज महाजन, दीपक कुमार, एस–एस पठानीयां, चिंरजी लाल, वेनी प्रसाद, रविन्द्र कोशल, शीला देवी, ब्रिज मोहन, मनाथ आटो मोबाईल, औकांर सिंह, बेदब्रत पुरी राज कुमार वन्शी, सुनील भल्ला, जरनैल सिंह, अशोक कुमार, डोली, हरिश चोपड़ा ।

माडल टाऊन :– महेन्द्र पाल, वावू राम रमण कुमार, सुनील विनायक करवल ज्युलर्ज, शिव दत महाजन, पं0 छजु राम, शाम मितल, राजीव गुप्ता, चन्द्र कान्त, विजय कुमार, जी.एल भणडारी, कृष्ण स्वरूप सुहाग वन्ती, जी.एस. वेदी, अशोक कुमार, समीर कुमार, बोध राज गुप्ता ।

डलहौजी रोड :– डा0 अशवनी कुमार, अशोक कुमार, वी.के महाजन, ठाकुर महिराज सिंह, एस.पी आनन्द, सुभाष करियाना स्टोर, चानन सिंह, प्रीतम सिंह सैनी, विजय लक्ष्मी आटो मोबाईल, कृष्णा टैन्ट हाऊस, डा0 विजय कमलेश्वर पठानीयां, स्वर्ण कुमार ।

गांधी चौक :– पवन गुलाटी, नरेन्द्र कुमार, गुलशन कुमार, दास मैडीकल सटोर, संजीव शारदा, जीतु गांरमिन्द, आर. के. गारमन्टि आशोक कुमार प्रधान, संजय विग, सुरेन्द्र कुमार, गोलचा इलैकट्रीकल, गोलडी गुप्ता, छज्जू राम, चान्दी राम राम नारायण, अश्वनी वर्मा, सुरेन्द्र गारमिन्ट, राजीव सेठ, नरेन्द्र जनरल स्टोर, राजेन्द्र, सेठ सिंगला गिफट हाऊस ।

आनन्दपुर रैटया:– संजय गुप्ता, रवि कुमार, बेदी मोर्टर्ज, कर्म देई, स्वः परस राम स्लगोत्रा, गुप्त दान, सतीश कुमार, रूप सिंह मन्हास, राज मन्हास, सागर सैनी, किश्न चन्द, जोगन्द्र सिंह सलारीया, सतपाल वेदी जैको सेल्स कार्पोरेशन, तरसेम, सैनी, राजेश, राकेश कुमार, हरिश कुमार, कुलदीप राज, धर्म चन्द सभ्रवाल, रणजीत मन्हास ।

पटेल नगर:– कुलतारिक भल्ला, विश्वा मित्र, जी.के. सरपाल, पवन चौपड़ा, अशोक कुमार, चमन लाल खोसला, अनिल बिज M.C. अशोक कुमार,

गीता इलैक्ट्रीकल, डा० वी.पी. संगर, कान्ता देवी, के.के शर्मा, सुदर्शन वर्मा सागर, राम सीड सैन्टर ।

ढाकी रोड :– शगुन स्वीट शाप, रघु प्रिटिंग प्रैस, हिमांशु, एस के वारीया, सुनीता देवी, कुलदीप राज, तरलोक नाथ शर्मा, हरवंश लाल थापा, किशन कुमार, पवन कुमार, राजेन्द्र मन्हास, केदार सैनी, यशपाल करियाना स्टोर, मनु शर्मा, राम लाल रूई वाल, अशोक पेन्टर, विशारद शर्मा, हरविन्द्र शर्मा, महाजन टैन्ट हाऊस, पी.एस. मनकोटिया, कृष्ण महाजन, अरूण गांधी, ओम प्रकाश सोंधी, शशी कुमार, अशोक कुमार, मनोज कुमार, सुनील महाजन, आर.पी.शर्मा ।

इन्दिरा कलोनी :– गोबिन्द, स्टेन क्रैशर, सुनिता बलगन, एस. के. शर्मा गुप्त दान, आर.के. धीर।

सरना :–अजय कोशल, रमेश महाजन, संजीव कुमार, राजेन्द्र सिंह मन्हास ।

शाहपुर कन्डी लमीनी–मनवाल रोडः– स्वः रमेश चन्द, ज्ञान चन्द धमान, स्वः राज कुमार महाजन रविन्द्र कुमार हन्स पाल, शिवम, स्वः मोहिनी महाजन, रिपु सुदन, अग्रवाल हैन्डलुम, विश्वनाथ कोहली, पुषविन्द्र पठानिया, अयोध्या प्रसाद ।

सराई मोहल्लाः–रणधीर सिंह M.C. अशोक कुमार, रविन्द्र कुमार ।

मान मार्किटः–गुरदियाल सिंह, राजीव खोसला, मित्तल इलैक्ट्रीकल ।

मिशन रोडः–ललित शर्मा, राकेश मलहोत्रा, ऊमा सुरेश, मृदुल सहिल ।

अन्दरून बाजार :– गजाधारी सराफ, सूर्य शर्मा, राकेश कुमार, विजय महाजन चौहान ज्युलर्ज, पप्पु जूस वाला, डा० ओ.पी. विग, रविन्द्र हांडा ।

जसूर :–M/s इण्डिया मोटर्ज, इण्डियन फाईनैन्स, कान्ता गुप्ता, चौहान मोटर्ज, रविन्द्र कुमार गोतम ।

भोआ–कलेसर–सुजानपुरः– जनक सिंह, स्वः चम्पा देवी, जितेन्द्र सिंह, परशु राम ।

धर्मशाला–धमेटा–नूरपुर :–आशषि कुमार मैहरा, पंकज शर्मा, थुरू राम

कठुआ :— सुभाष चन्द्र महाजन

मीरथल—:— कुलदीप राज शर्मा, धर्म चन्द शर्मा, लक्की सैनटरी स्टोर, राम चन्द शर्मा, पवन शर्मा ।

अन्दोई गुडा कलां :—विनोद कुमार, बनारसी दास, अशोक जरेयाल, गोवर्धन लाल, विक्की ललोत्रा

नंगल भूर :—गोवर्धन सिंह, साहिल, राजेन्द्र वुड ईण्डसट्रीज ।

मानसर :—दिनेश आनन्द, रविन्द्र सिंह जरेयाल गुलेरिया, टैन्ट हाऊस, शिव माडल स्कूल, अश्वनी कुमार, राकेश कुमार, जितेन्द्र सिंह ।

जन्डवाल:—शमशेर सिंह

भंगाला :—सतीश कुमार, स्वः कृष्ण महाजन, सतपाल प्रिया, प्रीतम चन्द, गन्धर्व सोबती, अनु मैडीकल स्टोर, संजीव कलाथ हाऊस, कृष्ण कुमार, ओंकार सिंह, विपन कालीया, आशाचन्द हार्डवेयर, विशाल सुनील, राकेश कुमार, रूलदू राम, राजेश कुमार, निर्मला देवी, ज्योती प्रकाश, मुन्शी राम, प्रशोतम लाल।

मुकेरीयां :—वेद प्रकाश, विकास महाजन, सुरेन्द्र कुमार, आर.के. वर्मा आदर्श कुमार, रविन्द्रा कलाथ हाऊस, अग्रवाल बर्तन भण्डार वनीत कुमार, अरोड़ा बीड़ी सिगरेट स्टोर, अग्रवाल बूट हाऊस, कान्ता मल्होत्रा, सुरेन्द्र कुमार, राज कुमार, हरिश कुमार, निर्मला देवी, पवन कुमार, रमेश जैन, सः मनमोहन सिंह, प्रवीण बैहल, नरेश कुमार, डा0 बिशन दास, जोगिन्द्र कुमार , आर. के. सोनी, धीमान शटरिंग स्टोर, विपन कुमार, वनारसी दास, शाम औहरी, स्वः रवि कुमार खुल्लर, रवि कुमार, सुखदेव सिंह चिबं, गंगा विश्व महाजन, इन्द्रजीत, राम प्यारी, अश्वनी कुमार, राम गड़ीया मशीनरी स्टोर, शिव शंकर आटो एजेन्सी, महाजन दी हट्टी, चमन लाल अजय बूट हाऊस, लक्ष्मी नारायण, रवि कुमार, M/s देस राज शर्मा, कार बाजार, रवि कुमार करियाना स्टोर, रछपाल सिंह, आशु मनियारी वाला, शिवम् मन्हास, कैप्टन कुलदीप सिंह, हेमन्त सैनी, रविन्द्र सिंह, अशोक कुमार ।

दसुआ:—विपिन शिंगारी, विपन कुमार गम्भीर, सुरेन्द्र कुमार, शिव शक्ति फ्रूट

कं0, वी.के. शर्मा, डा0 तरसेम डोगरा, सतपाल महाजन, जोगिन्द्र पाल महाजन, ममता देवी, सरोज देवी, सन्तोष रानी, सुनील कुमार सोंधी ।

टांडा उड़मुड़ :—सुभाष चंद्र, हरदियाल एण्ड कं, डा. जे.के. नागरथ, बलाकी राम, सुरेन्द्र कुमार नैय्र, सुरेन्द्र कुमार, अजय कुमार, सुखदेव मित्र, विजय कुमार, सुमन S.T.D. P.C.O, संगर इलैक्ट्रीकल, सन्तोष मरवाह, वनारसी दास, स्व: तिलक राज, शर्मा सैन्टरी स्टोर,, शेखर चन्द, नन्दा कलाथ हाऊस, प्रवीण बैहल, बलदेव राज, चेतन कुन्दरा, प्रवीण मलहोत्रा, मोहित राणा, अशोक कुमार, कमल चोपड़ा, देवेन्द्र कुमार, सतपाल, महेन्द्र बैहल, गणेश फ्रूट कं., रमेश चन्द, महेन्द्र सैनी, गोपाल चन्द, यश म्युजिक सैंटर ।

जालंधर–दिल्ली :—राजेन्द्र लाल विग, शान्ति स्वरूप शर्मा दिल्ली ।

गड़दीवाला :—शाम लाल अत्री

फगवाड़ा :—शर्मा ज्युलर्ज, राम रल्हन

सप्ताहिक दान :—गगन सिंह J.E ,सतीश कुमार ।

कुंडसा–चुहड़पुर :—महेश कटोच, जगदीश शर्मा, दीप ज्योती पब्लिक स्कूल, राज कुमार ।

काठगढ़ बाई:—देस राज, बसन्त सिंह

इन्दौरा :—डा. गणेश धीमान, बिजलू राम, लवली जनरल स्टोर, वरूण शर्मा, रणदीप शौरी, गुरदीप शौरी, रमेश कुमार, चेतन धीमान, राजेश कुमार गोली, उनरेश शर्मा, रमेश चन्द परिवार, सुरेन्द्र राणा, किशन चन्द, जितेन्द्र धीमान, अनिल कटोच, हरदेव सिंह, ममता कटोच, पवन शर्मा ।

सनौर :—विशाल ठाकुर

चनौर :— वरिन्द्र कुमार

मोहटली :—पवन कुमार महाजन, तरवीज सिंह ।

भप्पू :— Lt. Col.जगदेव सिंह

डमटाल :—दत्ता सर्विस स्टेशन, शिवालय ट्रेडिंग कं0, ठा0 जगदेव, हीरा लाल, सज्जन सिंह, हरपाल सिंह, सुभाष चन्द्र जडियाल ट्रेडर्ज, केवल कृष्ण

महाजन, अशोक एण्ड कंपनी, सुदागर मल, राज एण्ड कंपनी, विश्व कर्मा स्टोन क्रैशर, विश्व जमवाल, विशाल जमवाल, एम.एल कौशल, चन्द्र शेखर, केवल कृष्ण, आर.के. इलैकट्रीकल, नेहा ढावा, स्टार राईस मिल, रतन चन्द एण्ड कं० ।

कन्दरोड़ी–तोकी :—ठाकुर रूमेल सिंह, तरलोक चन्द M/s सुनीता बद्रर्स देव गुण H.P.M.C.

घरोटा दीनानगर :—सुदेश कुमार लम्बरदार, सुरेश कुमार राजू दी हट्टी, रोहित महेन्द्र, जगजीत मोहन अग्रवाल, अग्रवाल करियाना स्टोर, विवेक कोहली, महाजन पलाई बुड स्टोर, आनन्द कपूर, नरेश कुमार, प्रवोध चन्द्र, जगदीश खोखर, आशा रानी, ललित बूट हाऊस, शिव शंकर पोल्ट्रीफार्म ।

गुरदासपुर :—अशोक ट्रेर्डज, विकानेर मिठाई भण्डार, विनोद कुमार गन्डोत्रा, कन्नु–भानु, नीतन मोटर्ज, कमल नारायण शर्मा, अशोक कुमार, भारत मैडीकोज, सन्त साई मैडीकल स्टोर, प्रो० टी.आर. मल्होत्रा, आर.सी. अवरोल, लवली स्वीट शाप, रमण कुमार , जगदीश सराफ, योगराज, अश्वनी शर्मा, रिंटु, नरेश कुमार, श्री तरसेम महाजन, जनक राज, कंवर सराफ, श्री सतीश महाजन P.W.D. ।

60रू या इससे अधिक दानियों की मासिक सूची

घरोटा दीनानगर :—दिनेश कुमार 60रू

इन्दौरा :—डा० दिनेश ठाकुर, रूप सिंह 91रू

100 रू मासिक दानीयों की सूची

इन्दौरा :—शेष राम, वर्षा रानी, सत्या देवी, गोबिन्द पठानीयां मोतिया ठाकुर ।

मोहटली :— L/Co. N.S. पठानियां, नेहा–समीर, सुरेन्द्र आयल मिल ।

हलेड़ :—रणजीत सिंह सनोरीया ।

डमटाल:—डायंमड स्येन क्रैशर, नीतू शर्मा, करतार सिंह, सुभाष एण्ड क०, कृष्ण चन्द मैहता, भारत इलैकट्रोनक, लक्ष्मी एण्ड क०, नव दुर्गा एण्ड कं, कर्म चन्द एण्ड कं ।

कन्दरोड़ी–तोकी :—परशोतम करियाना स्टोर, मदन सिंह सलारिया ।

घरोटा दीनानगर :—सुरेन्द्र मोहन औहरी, शिव शक्ति ट्रेडिंग कंपनी

महीप करियाना स्टोर ।

बटाला:—सुरेन्द्र कुमार—महेन्द्र पाल ।

गुरदासपुर :—भरावां दी हट्टी, राम प्रकाश शर्मा, अभि S/o नवीन उपप्ल, बी.डी. शर्मा, नरेन्द्र कालिया, नारंग गिफ्ट सैन्टर ।

मीरथल:—कृष्ण गोपाल शर्मा, हरजोत सिंह, नवजोत सिंह, अमन दीप सिंह, पवन शर्मा, संजीव कुमार ।

मानसर :—नव दुर्गा स्टोन क्रैशर, शिव नाथ शर्मा ।

भंगाला :—अनु मैडीकल स्टोर, अजीत प्रशाद शर्मा ।

मुकेरीयां :—शारदा वसिष्ट, दमन कुमार, वाल किशन नौला, प्रेम पाल मन्सोत्रा, सुभाष चन्द सुरेश कुमार, यश पाल चौपड़ा, अनिल जोशी, ओम प्रकाश कतना, महाजन मैटल वर्कस, सन्तोष कुमार, सतीश डोगरा, कुन्दरा टैन्ट हाऊस, अजय अग्रवाल, कमलजीत वालीया, शंकर राईस मिल्स, सचदेवा एण्ड कं0 कुन्दन लाल शर्मा, मास्टर कश्मीर सिंह, गंगा विश्न वालियां ।

दसुआ :—डा. के.डी. सिंह मल्होत्रा, अशोक कुमार नन्दा, दीपक धीर, आर. पी. नैटयर, सतीश मरवाह, कान्त, शिविन्द्र चौहान, बिनोद कुमार, कमल अग्रवाल, राजन वर्मा, परमप्रीत सिंह, सुभाष भाटिया, अक्षय शर्मा ।

टांडा उडमुड :—डा. एन.डी. पाठक, डा. उपासक भगत, मोहन लाल, सुभाष चावला, अमृत राये वालीया, विजय अरोड़ा । शाम सुन्दर, गोरा काला, गणेश फ्रूट कं, सीतश कुमार, राकेश कुमार ।

साप्ताहिक दान 100रू:

इन्दौरा :—सिद्धार्थ

ढांगु पीर :—चुनी लाल राम रत्न ।

सुन्दर नगर :—राकी टेलर, हरिश साहनी, उषा गोयल, शशी पाल, सुदेश मैहता नरसिंह होम, बलवीर महाजन, सुमीत जमवाल ।

माडल टाऊन :—जितेन्द्र कुमार, प्रशोतम लाल ।

डलहौजी रोड :—इण्डिया मोटर्ज, अशोक कुमार मिलन मोटर्ज, विजय अग्रवाल, पायल डावर, संजना चौपड़ा, शाम लाल, सुरेन्द्र कुमार, वी.आर इन्टर प्राईजेज, रमण महेन्द्र, सुरेन्द्र नाथ धीर, अतुल गुप्ता ।

गांधी चौक :—स्वः गुरदयाल कोहली, शकुन्तला देवी, सुनील कुमार, बंसी लाल महाजन, पुरी इलैक्ट्रीकल, अनिल वासुदेवा, विनोद वर्मा, कर्ण इलैक्ट्रीकल, जी मैन्स वेयर ।

आनन्दपुर :—अमृतसर म्यूजिक हाऊस, राम प्यारी महाजन, स्वः पन्ना लाल महाजन, मंगत राम वेयर हाऊस, सोहन लाल, मदन सिंह पठानिया, धर्म चन्द सभ्रवाल, अशोक भाटिया ।

पटेल नगर :—सुदर्शन चौपड़ा, भूपिन्द्र महाजन, जितेन्द्र कुमार, प्रशोतम दास, गुरबख्श राये, सुरेन्द्र नाथ धीर, दुर्गा नाथ काचरू, बलवीर महाजन ।

ढाकी रोड :—राजन लाम्बा, ऐल.पी. बन्टा, मुनीष शर्मा।

इन्दिरा कलोनी :—डा. डी.डी. कपूर, अविनाश भसीन, बृज मोहन, अनिल नन्दा ।

सरना :—भारत इन्जिनियरिंग वर्कस ।

शाहपुर कण्डी–लमीनी–मगवाल रोड :—राम नाथ भरतरी, धर्मवीर दत्ता, उषा गोयल, स्वः कैलाश चन्द्र दत्ता, सतीश सैनी, राकेश बडेहरा ।

सराई मुहल्ला :—सुभाष कुमार।

मान मार्कीट :—पवन, रविन्द्र कुमार साहिल, अश्वनी गुप्ता ।

मिशन रोड :—शिव कुमार शर्मा, भावना, दलजीत कटोच ।

अन्दरून बाजार:— रमेश महाजन, कमल नन्दा ।

जसूर :—सन्त राम कानूगो, सुदर्शन करियाना स्टोर ।

भोया कलेसर–सुजानपुर :—अम्बिका ट्रेडिंग कं.

151रू मासिक देने वाले दानियों की सूची

मुकेरीयां :— राजेश बलगन

पटियाला :— डा. मनजीत भारद्धाज ।

पटेल नगर :— M/s महालक्ष्मी मोटर्ज ।

मुकेरीयां :— सुरेश कुमार,, प्रकाश बन्ती W/o मुन्नी लाल 200 रू ।

दसुआ :— विनोद रलहन

सुजानपुर :— करतार सिंह राणा ।

डल्हौजी रोड :— फकीर चन्द, अशोक ट्रांसपोर्ट कं.

माडल टाऊन :— ललित भाटिया 250 रू

जालन्धर :— आत्मा राम भारती 500 रू

फगवाड़ा :— प्रदीप अहुजा । 500 रू

सुन्दर नगर पठानकोट :— पूर्ण सलारिया । 500 रू

काठगढ़ महादेव महिमा

महेश नन्दन गणेश जी सुमिरण, कर सरस्वती का ध्यान ।
परम–पवित्र काठगढ़ शिव–मंदिर की महिमा करूँ बखान ।।

हिमाचल–प्रांत जिला कांगड़ा मशहूर इन्दौरा तहसील है ।
उसके पश्चिम पंजाब सीम पर काठगढ़ गांव चार मील है ।।

है शिव मन्दिर जो युग–युग पुराना है ।
आदम–कद शिव लिंग अद्भुत रूप सुहाना है ।

किले की भांति ऊँचा टीला, छौछ़ खड्ड किनारा है ।
ठीक इसके दक्षिण वलखाती, बहती ब्यास नदी की धारा है ।।

मन्दिर के पूर्व उजड़ा ऊँचा–नीचा काठगढ़ गांव है ।
छौंछ पार गूढ़ा मीरथल गांव बीच सुन्दर शिव–धाम है ।।

दो फाड़ में यह शिव लिंग, जिसकी महिमा अपरम्पार है ।
स्वयं भू से प्रकट प्रभो, रूप जिनका निराकार ओंकार है ।

कब और कैसे प्रकट कोई ठीक बतला नहीं सकते ।
कब और क्यों मंदिर बनवाया पक्का कह नहीं सकता ।।

सत युग, त्रेता युग, द्वापर से भी पहले, दन्त कथाएं बतलाती हैं ।
पहले खुले आकाश में थे प्रभू, रूप जिनका निरकार ओंकार है ।

ऋषि–मुनियों ने पूजा–अर्चना की है, इस देव स्थान की ।
इतिहास ही बतलाता है, वापिसी हुई यहां से सिकन्दर महान की ।।

महाराजा रणजीत सिंह का भी कहीं जिक्र आता है ।
शायद मन्दिर बनवाने का भी श्रेय उनको ही जाता है ।।

महा शिवरात्रि मेला सदियों से शिव प्रांगण में, धूम–धाम से सजता है ।
लड्डू–पेड़ा, जलेबी–पकौड़ा, खेल–खिलौने साथ ढोल–धमाका बजता है ।।

दो चार दिन स्त्री–पुरूष, नौजवान, बच्चे खूब मन भाते हैं ।
कुछ श्रद्धालु भक्त भी आकर नत–मस्तिक शीश झुकाते हैं ।।

सारा वर्ष दूर–दराज से यहां आते भक्त श्रद्धालु हैं ।
मनोकामना करता पूरी भोले–भण्डारी दीन दयालु है ।।

श्रावण–पवित्र मास में जैसे वर्षा रिम–झिम बादल छाते है।
भक्त शिव महादेव पर घी, दूध–दही जल विल्व–पत्ती चढ़ाते हैं ।

युगों पुराने इस पवित्र–पावन स्थान का हुआ नहीं कोई सुधार ।
जैसे गंगा–पांडे कहें हड्डखानी, हम कहते पवित्र जल धार ।।

क्षेत्र में शूरवीर, राजनैतिक महारथी पैदा हुए धनवान ।
पर इस पुराने धर्म स्थल की ओर गया न किसी का ध्यान ।।

समय बीता शिव प्रेरणा से प्रबन्धक सभा का गठन हुआ ।
मन्दिर उत्थान एवं प्रचार का भर–पूर फिर यत्न हुआ ।।

कहे कान्ता मानव जाति से सभा का तन, मन, धन से सहयोग करें ।
मानव जीवन सफल है वहीं जो प्रभु व समाज सेवा में निरन्तर निष्काम रहे ।।

पहचानों अपने–आप को छोड़ो आपसी वैर एवं तजो विलास ।
प्राचीन शिव मन्दिर एवं समाज–सुधार हेतु नित–प्रति करो प्रयास ।।

श्री गणेश जी की आरती

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ।।
जय गणेश...
पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करे सेवा ।।
जय गणेश...
एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी ।
माथे पे सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी ।।
जय गणेश ....
अन्धन को आंख देत कोढ़िन को काया ।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया ।।
जय गणेश...
फूल चढ़ें फल चढ़ें और चढ़े मेवा ।
सूर श्याम शरण आए सुफल कीजे सेवा ।।

****

श्री हनुमान जी की आरती

****

आरती कीजै हनुमान लला की ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।।
जाके बल से गिरिवर कांपे ।
रोग-दोष जाके निकट न झाँके ।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई ।
संतन के प्रभु सदा सुहाई ।।
दे वीरा रघुनाथ पठाये ।
लंका जारि सीय सुधि लाये ।।
लंका सो कोट समुद्र सीखाई ।
जात पवन सुत बार न लाई ।।
लंका जारि असुर संहारे ।
सिया राम जी के काज संवारे ।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे ।
आनि सजीवन प्रान उबारे ।।
पैठि पताल तोरि जम-कारे ।
अहिरावन की भुजा उखारे ।।
वायें भुजा असुर दल मारे ।
दहिने भुजा संतजन तारे ।।
सुरनर मुनि आरती उतारे ।
जै जै जै हनुमान उचारे ।।
कंचन थार कपूर लौ छाई ।
आरती करत अंजना माई ।।
जो हनुमान जी आरति गावै ।
बसि बैकुठ परमपद पावै ।।

नवनिर्मित श्री राम मन्दिर का बाहरी दृश्य